१३४ धातु पाठ रूप प्रयोग सहित

निमीलति श्मीलति क्ष्मीलति   पीलति पन्नु ह पीलुर्वृक्षः   नीलति सूर्यंगतत्रयः नीलः   शीलति सदाधर्म्मं   कीलति वत्सं भयालः   कूलति वार्द्धिं प्राचीनः   शूलति आगः शूलिनं   तूलति कनकं वनिकुतुला   पूलति तृणानि वागः

स्मील क्ष्मील निमेषणे॥ पील प्रतिष्टम्भे॥ णील वर्णे॥ शील समाधौ॥ कील बन्धे॥ कूल आवरणे॥ शूल रुजायां॥ तूल निष्कर्षे॥ पूल संघा

मूलति यमः प्रतिष्ठा मूलिः   फलति फलं   चुल्लति   फुल्लति कलिका   चिल्लति हावकरणं लोयं वेलति वेला चलति केलति केलिः खेलति खेला क्ष्वेलति पेलति फेलति शेलति वेल्लति

ते॥ मूल प्रतिष्ठायां॥ फल निष्पत्तौ॥ चुल्ल हावकरणे॥ फुल्ल विकसने॥ चिल्ल शैथिल्ये॥ वेलृ चेलृ केलृ खेलृ क्ष्वेलृ पेलृ फेलृ शेलृ वेल्ल

चलति शलति   खलति सूक्ष्मगात्रः खलः स्खलति पूर्वं मालाकारं सैविधानि   गलति अन्नं लोकः   श्वलति श्वल्लति   खोडति   खोलति खोडः खालति   धोरति   से

चलने॥ स्खल सञ्चलने॥ खल संचये॥ गल अदने॥ श्वल श्वल्ल आशुगमने॥ खोरृ खालृ गतिप्रतिघाते॥ धोरृ गतिचातुर्ये॥ त्स

रति खलः क्मरति खलः   अभ्रति वभ्रति मभ्रति चरति गत्यर्थधर्मिति   ष्ठीवति क्षीवति   जयति विजयं जीवति वलति   पीवति मी

र छद्मगतौ॥ क्मर हूर्छने॥ अभ्र वभ्र मभ्र चर गत्यर्थाः॥ ष्ठिवु निरसने॥ जि जये॥ जीव प्राणधारणे॥ पीव मी

वति तीवति णीवति   उर्वति तुर्वति थुर्वति दुर्वति धुर्वति   मूर्वति मवति   गूर्वति   पूर्वति पयसा घटं पर्वति मर्वति   चर्वति चर्वनं   कर्वति खर्वति

व तीव णीव स्थौल्ये॥ उर्वी तुर्वी थुर्वी दुर्वी धुर्वी हिंसार्थाः॥ मुर्वी बन्धने॥ गुर्वी उद्यमे॥ पूर्व पर्व मर्व पूरणे॥ चर्व अदने॥ कर्व खर्व

गर्वति   पिन्वति मिन्वति निन्वति   हिन्वति दिन्वति धिन्वति जिन्वति पिन्वति लोकः   रक्षति ... धनं लोकः ... समूहयतीत्यर्थः ... विद्यार्थी ...

गर्व दर्पे ॥ पिवि मिवि णिवि सेचने ॥ हिवि दिवि धिवि जिवि पिवि प्रीणनार्थाः ॥ रक्ष पालने ॥ णिक्ष चुम्बने ॥ मृक्ष संघाते ॥ ... ॥ त

तक्षति त्वक्षति काष्ठं तक्षकः तक्षा निक्षति ... इक्षति स्तृक्षति नक्षति   वक्षति   मृक्षति ... ॥ काङ्क्षति काङ्क्षा वाङ्क्षति ... माङ्क्षति

क्ष त्वक्ष तनूकरणे ॥ णिक्ष चुम्बने ॥ तृक्ष स्तृक्ष णक्ष गतौ ॥ वक्ष रोषे ॥ मृक्ष संघाते ॥ तक्ष त्वक्षणे ॥ सूर्क्ष्य अनादरे ॥ काक्षि वाक्षि माक्षि काङ्क्षा

द्राङ्क्षति ध्राङ्क्षति ... ध्वाङ्क्षति ...   चूषति पयः ... तूषति ... पूषति ... मूषति ... लूषति ... भूषति ... ऊषति ...

याम् ॥ द्राक्षि ध्राक्षि ध्वाक्षि घोरवासिते च ॥ चूष पाने ॥ तूष तुष्टौ ॥ पूष वृद्धौ ॥ मूष स्तेये ॥ लूष भूष अलंकारे ॥ ऊष रुजायाम् ॥ ४

ईषति ... कषति शिषति जषति झषति शषति वषति मषति रुषति रिषति ...   भषति ... जेषति ... वेषति मेषति ... वर्षति

ईष उञ्छे ॥ कष खष शिष जष झष शष वष मष रुष रिष हिंसार्थाः ॥ भष भर्त्सने ॥ जिषु विषु मिषु पृषु वृषु मृषु

वर्षोडकति   मर्षति मर्षनः   पोषति पोषकः श्रेषति श्लेषति प्रोषति प्लोषति ... घर्षति ... हर्षति ... तोसति ह्रसति ह्लसति रसति   लसति विलासः

सेचने ॥ मृषु सहने च ॥ पुष पुष्टौ ॥ श्रिषु श्लिषु प्रुषु प्लुषु दाहे ॥ घृषु संघर्षे ॥ हृषु अलीके ॥ तुस ह्रस ह्लस रस शब्दे ॥ लस श्लेष

... ॥ १

वर्षा

महनार्थः ... ॥ २

निगाक्रि   उर्जति ... वर्जति सर्जति   हसति ...   मसति ...   ...   पवति ...   ...

णक्रीडनयोः ॥ ऊर्ज्ज वर्ज्ज सर्ज्ज ... ॥ हस हसने ॥ ... ॥ मिल ... ॥ ... ॥ ...

...   ... हिंसायां ...   दहति दहनः   ... सर्वे लोकः ...   ... दहति ...

... ॥ ... हिंसायां ॥ ... ॥ मिह सेचने ॥ दह ... ॥ ... ॥ ... ॥ दहि वृहि वृद्धौ ॥ वृ

... हिंसा   अर्हति ... महान् महादेवः ... ॥ ... धनं ... धनी ... ॥ ...

हणधने ॥ तुहिर दुहिर उर्दिर अर्दने ॥ अर्ह मह पूजायाम् ॥ ... ॥ ... विनाशे ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ...

स्त्यायति ... संघातः समूहः ...   खादति ... हिंसा ...   ... लोकः ... धनं ...

॥ स्त्यै ष्ट्यै शब्दसंघातयोः ॥ खेद खदने ॥ क्षै जै षै क्षये ॥ ... पाके ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ध्यै चिन्तायाम् ॥ ...

... धमति ... वर्णकालादः ... मनति मुनिः मननं ...   ... स्वर्गः स्वलोकः ... ध्यायति ध्यानं ...

न ॥ ... संयोगयोः ॥ ... ॥ ... ॥ दान दाने ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ...

विवति ४

लोकः मनति पूमस्वः ऊर्लिअच्छति वाचा ... घनति घृणंघर्म ध्वनि धियंरवलः प्रवति प्रवः ... स्कन्दति ग्रीअसनि स्कन्द॥
गतौ॥ अघ्राघल्वे॥ गृ घृ सेचने॥ ध्वृ हूर्च्छने॥ स्रु गतौ॥ षु श्रु दु द्रु अस्कन्दने॥ ... ॥ स्कन्दिर् गतिशोष
यभति पूर्वामैथुन मिहवनं जवनिस ... प्रसवनि ... त्यजनि ... सजनि ... दशनि ...
णयोः॥ यभ मैथुने॥ णम प्रह्वत्वे शब्दे च॥ षू प्रसवे॥ धुर्श्वर्ये॥ ज्रि जरिकरणे॥ त्यज हानौ॥ षञ्ज सङ्गे॥ दृशिर् प्रेक्षणे॥ दंश दशने
चिकित्सति ... परस्मैकर्ल ... वाधनस्कन्दविलोडने हिंसने
॥ कित निवासे रोगापनयने च॥ ॥ परस्मैभाषाः॥ २२०॥ ॥ एधृ वृद्धौ॥ स्पर्द्ध सङ्घर्षे॥ गाधृ प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च॥ बाधृ विलोडने॥
दधनं ... स्कन्दनं ... वन्दनं ... कल्याणं ... मन्दनं ... किंवा
दध धारणे॥ स्कुदि आप्लवने॥ श्विदि श्वैत्ये॥ वदि अभिवादनस्तुत्योः॥ भदि कल्याणे सुखे च॥ मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु॥ स्पदि
हास्यन्दनं मुधा ... स्वदनं स्वादनं स्वर्द्दनं स्वादुमिष्ट ... कूर्दनं खुर्द
किञ्चिच्चलने॥ क्लिदि परिदेवने॥ मुद हर्षे॥ दद दाने॥ ष्वद स्वर्द आस्वादने॥ उर्द माने क्रीडायां च॥ कुर्द खु
र्द गुर्द गुद क्रीडायामेव॥ षूद क्षरणे॥ ह्राद अव्यक्ते शब्दे॥ ह्लादी सुखे च॥ पर्द कुत्सिते शब्दे॥ यती प्रयत्ने॥ युतृ जुतृ भासने॥ विथृ वेथृ याच
नाथनं नाधनं ... कत्थनं ... लोकनं आलोकनं लोचनं ...
ने॥ नाथृ नाधृ याच्ञोपतापैश्वर्याशीःषु॥ श्रथि शैथिल्ये॥ ग्रथि कौटिल्ये॥ कत्थ श्लाघायां॥ शीकृ सेचने॥ लोकृ लोचृ दर्शने॥ श्लोकृ सं
घाते॥ द्रेकृ ध्रेकृ शब्दोत्साहयोः॥ रेकृ शङ्कायां॥ अकि लक्षणे॥ मकि मण्डने॥ कक लौल्ये॥ कुक वृक आदाने॥ चक तृप्तौ प्रतिघाते
च॥ ककि वकि श्वकि त्रकि ढौकृ त्रौकृ ष्वष्क वस्क मस्क टिकृ टीकृ तिकृ तीकृ रघि लघि गत्यर्थाः॥ अघि वघि मघि गत्या
क्षेपे॥ मघि कैतवे च॥ राघृ लाघृ सामर्थ्ये॥ द्राघृ आयासे च॥ श्लाघृ कत्थने॥ ... ॥ ... व्यक्तायां वाचि॥ कच बन्धने॥ मच मुचि कल्क

न॥ मवि धावने॥ स्नुय प्रजनने॥ पवय विद्य कीकवन्धे॥ हूय स्नूय प्रसादे॥ ... ॥ अजि ... ॥

[illegible]

वर्ज्जक विभ्रह ... दीक्षो॥ निज निशानक्षमायां॥ ... ॥ ... क्रमदिंसयो॥ ... वलने॥ ... विकसने॥ ... ॥

[illegible]

... ॥ ... ॥ हिति ... ॥ ... ॥ म ... ॥ ... ॥ ... पलायने॥ ... विबाधायां॥

[illegible]

कुति दाहे॥ वति मति ... ॥ ... ॥ मुति ... ॥ ... ॥ ... ॥ वति ... ॥ ... ॥ ... ॥

[illegible]

तने॥ कति ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥

श्री

[illegible]

... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥

[illegible]

॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥

[illegible]

॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥

[illegible]

॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥

[illegible]

... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥

नस स्त्वं चलने च ॥ वल वल्ल च ॥ मल मल्ल धारणे ॥ हुल हुल्ल पविशारणे हिंसादानयोः ॥ कल संख्याने ॥ कल्ल अशब्दे ॥ नट दट दट

वन ॥ षट ह्रेषणे वट खट वट रट लट पट षट हट भट हट हसवन ॥ षट स्त्रवणगतौ ॥ क्षण वाधने ॥ स्पर्श स्कन्दने ॥ धूक्ष धिक्ष सन्दीपनजीवन

क्षणनयोः ॥ हक्क वचने ॥ लिक्ष विशायादाने ॥ शिक्ष याञ्चायां ॥ दक्ष दृद्धौ ॥ लीक्षुा धथव ॥ दीक्ष मौण्ड्यायनयन नियमव्रतादेशेषु ॥ १ ॥

ईक्ष दर्शने ॥ ईष गतिहिंसादानयोः ॥ शष वधकार्यावाप्ति ॥ लष कान्तिप्सायां ॥ यष प्रयत्ने ॥ अष लष वष कष खष गतौ ॥ वष हष सव

कणे ॥ कास शब्दकुत्सायां ॥ काशृ काश दीप्तौ ॥ नास नास शब्दे ॥ नस कौटिल्ये ॥ श्वस करण ॥ अक्षलम्बि... कृयायां ॥ ग्रसु ग्लसु अदने ॥ ○ ॥

दयस्वरायां ॥ वहि महि वृद्धौ ॥ जुहि क्ष्णिहि गतौ ॥ गर्ह गल्ह कुत्सने ॥ वल्ह प्राधान्ये परिभाषणहिंसादानयोः ॥ वर्ह च ॥ वह जह वाह प्रय

त्ने ॥ द्राह निद्राक्षये ॥ उहिर् अर्दने ॥ गाहू विलोडने ॥ घुषि कान्तीकरणे ॥ ष्मिट ईष वृहसने ॥ कृड खुड गुड घुड दुड डड लणध्वं ॥ चुड

क्रुड कुड चुड पुड मुड गाड उल्ल ऋगतौ ॥ मृड आवरणे च ॥ धृड पूव ध्वंसने ॥ भड पुरिदाने ॥ चड च्युड चलने ॥ त्रिड वृद्धौ ॥ पुड पवने ॥

मूड बन्धने ॥ डीड विहायसा गतौ ॥ मुड लोपने कुत्सने च ॥ मान पूजायां ॥ वध बन्धने ॥ नरु आदरे ॥ तुल खर प्राप्तौ ॥ यु त गु रु नव ॥

दीप्तौ ॥ ष्णिह वर्धे ॥ ष्विदि स्नेहने ॥ ष्विदृ मोचने च ॥ धूटय विवर्जने ॥ लूट लूट लुण्ठ प्रतिघाते ॥ कुरुस चलने ॥ लरु रु हिंसायां ॥

स्रंसु भ्रंसु अवस्रंसने ॥ ध्वंसु गतौ च ॥ स्रम्भु विश्वासे ॥ वृतु वर्तने ॥ वृधु वृद्धौ ॥ शृधु शब्दकुत्सायां ॥ स्यन्दू प्रस्रवणे ॥ कृपू सामर्थ्ये ॥ वृत्ः
द्युतादिः २२ ॥ वृतादिः ॥ घट चेष्टायां ॥ व्यथ दुःखभयचलनयोः ॥ प्रथ प्रख्याने ॥ प्रस विस्तारे ॥ म्रद मर्दने ॥ स्खद स्खदने ॥ क्षजि गत
नीव ॥ दक्ष हिंसायां च ॥ क्रप कृपायां ॥ कदि क्रदि वैक्लव्ये ॥ कद क्रद ज्ञानआदन च ॥ ञित्वरा सम्भ्रमे ॥ ॥ घटादयः षानुबन्धाः ॥ ८
घटादिः ॥ १४ ॥ १३३ ॥ ॥ ज्वलनरूपाः ॥ ॥ ज्वर रोगे ॥ गड सेचने ॥ हेड वेष्टने ॥ वट भट परिभाषणे ॥ णट नृत्तौ ॥ ष्टक प्रतिघाते ॥
चक तृप्तौ ॥ कखे हसने ॥ रगे शङ्कायाम् ॥ लगे सङ्गे ॥ ह्रगे ह्लगे षगे ष्ठगे संवरणे ॥ कगे नोच्यते ॥ अक अग कुटिलायां गतौ ॥

कण रण गतौ ॥ चण शण श्रण दाने ॥ श्रथ क्नथ क्रथ क्लथ हिंसार्थाः ॥ वन च ॥ वनु च नोच्यते ॥ ज्वल दीप्तौ ॥ ह्वल ह्मल चलने ॥ स्मृ आध्याने ॥ दॄ
भये ॥ नॄ नये ॥ श्रा पाके ॥ मारण तोषण निशामनेषु ज्ञा ॥ कम्पने चलिः ॥ छदिर् ऊर्जने ॥ जिह्वोन्मथने लडिः ॥ मदी हर्षग्लेपनयोः ॥ ध्व
न शब्दे ॥ ॥ घटादयो मितः ॥ ॥ घटादिः ३७ ॥ जनीजॄष्क्नसुरञ्जोऽमन्ताश्च ॥ ज्वलह्वलह्मलनमामनुपसर्गाद्वा ॥ ग्लास्ना
वनुवमां च ॥ न कम्यमिचमां ॥ शमो दर्शने ॥ यमोऽपरिवेषणे ॥ स्खदिरवपरिभ्यां च ॥ फण गतौ ॥ ॥ घटादयः षानुबन्धाः ॥ ञ ॥ द
लवलस्खलक्षयत्रायश्यणुहश्चञ्च ॥ ॥ यम्यर्थाः ॥ राजृ दीप्तौ ॥ ॥ डरयमाराधाः ॥ ॥ टुभ्राजृ टुभ्राशृ टुभ्लाशृ दीप्तौ ॥ ॥ अ

स्यमति स्वनति समति स्तमति ज्वलति प्रज्वलः चलति जलति टलति ट्वलति स्थलति स्थलं हलति हलायुधः

त्मनेभाषाः॥ ॥स्यमु स्वन शब्दे॥ षम ष्टम अवैक्लव्ये॥ ज्वल दीप्तौ॥ चल कम्पने॥ जल धान्ये॥ टल ट्वल वैक्लव्ये॥ ष्ठल स्थाने॥ हल विलेखने

णलति बलति धान्यं बलाकः पुलति पुलिनं कोलति कुलं कुलालः कोलति कुलीनः हूलति पलति फलति पतति पथति

॥णल गन्धे॥ बल प्राणने॥ पुल महत्त्वे॥ कुल संस्त्याने बन्धुषु च॥ हूल हिंसासंवरणयोः॥ पल फल पत्लृ पथ गतौ॥ क्वथे निष्पाके॥ म ९

मथति वमथुः वमति गरलं दूः सहते रमते क्रीडति क्वनति

न्थ विलोडने॥ टुवम उद्गिरणे॥ भ्रमु चलने॥ क्षर संचलने॥ ॥परस्मैभाषाः॥ षह मर्षणे॥ रमु क्रीडायां॥ ॥आत्मनेभाषौ॥ ॥षद्लृ

शीयति सीदति शातयति क्रोशति कोचति बोधति आरोहति

विशरणगत्यवसादनेषु॥ शद्लृ शातने॥ क्रुश आह्वाने रोदने च॥ कुच सम्पर्चनकौटिल्यप्रतिष्टम्भविलेखनेषु॥ बुध अवगमने॥ रुह जन्मनि

कसति हिक्कति हिक्का धावति धावनं अञ्चति अञ्चनं जुसति जुसनं

प्रादुर्भावे॥ कस गतौ॥ इति ज्वलादि॥३०॥ परस्मैभाषाः॥ ॥हिक्क अव्यक्ते शब्दे॥ धावु गतिशुद्ध्योः॥ अञ्चु गतिपूजनयोः॥ जुस दीप्त्याः

जुसनं वेणति वेणनं वाद्यसाधनं ज्ञानं याचति याचनं रेटति रेटनं चतति चतनं चदति चदनं प्रोथति प्रोथनं मेदति मेदनं

यानयोः॥ वेणृ ज्ञानचिन्तानिशामनवाद्य॥ टुयाचृ याच्ञायाम्॥ रेटृ परिभाषणे॥ चते चदे याचने॥ प्रोथृ पर्याप्तौ॥ मिदृ मेदृ मेधा

मेधति मेधनं निन्दति निन्दनं नेदति निन्दनं शर्धति शर्धनं मर्धति मर्धनं बोधति बोधनं बुन्दति बुन्दनं खनति खननं चीवति

हिंसनयोः॥ मेधृ सङ्गमे च॥ णिदृ णेदृ कुत्सासन्निकर्षयोः॥ शृधु मृधु उन्दने॥ बुधिर् बोधने॥ उबुन्दिर् निशामने॥ खनु अवदारणे॥ [illegible]

चीवति चीवरं चायति चायनं दाशति दाशनं दासति दासनं भेषति भेषणं भ्रेषति भ्रेषणं स्पशति स्पशनं लषति लषणं

चीवृ आदानसंवरणयोः॥ चायृ पूजानिशामनयोः॥ दाशृ दासृ दाने॥ भेषृ भये॥ भ्रेषृ चलने॥ स्पश बाधनस्पर्शनयोः॥ लष कान्तौ॥ ॥

चषति चषणं रुक्षति रुक्षणं कषति कषणं माहति माहनं गूहति गूहनं हरति हरणं हरति हरणं अलति अलं अलनं पर्याप्ति वारणकर्मकार्यं धरति धरणं

चष रुक्ष रुक्षणे॥ कष हिंसायां॥ माहृ माने॥ गुहू संवरणे॥ भृञ् भरणे॥ हृञ् हरणे॥ अलं भूषणपर्याप्तिवारणेषु॥ धृञ् धा

नयति नयनं द्विकर्मकार्यं दानं शानं पचति पचनं भजति भजनं श्रयति श्रयणं रञ्जति रञ्जनं शपति शपनं त्वेषति त्वेषणं

रणे॥ णीञ् प्रापणे॥ दान अवखण्डने॥ शान तेजने॥ डुपचष् पाके॥ भज श्रिञ् सेवायां॥ रञ्ज रागे॥ शप आक्रोशे॥ त्विष दीप्तौ॥ ॥

यजदेवपूजासङ्गतिकरणदानेषु॥ डुवपबीजसन्ताने॥ वहप्रापणे॥ वेञ्तन्तुसन्ताने॥ व्येञ्संवरणे॥ ह्वेञ्स्पर्द्धायांवाचि॥
॥ ॥उभयभाषाः॥ ॥वसनिवासे॥ वदव्यक्तायांवाचि॥ टुओश्विगतिवृद्ध्योः॥ वृतुयजादिः॥ ॥परस्मैभाषाः॥ ॥भ्वोस्य
र्निकानुविकरणाः स्वादयः समाप्ताः॥ ॥अनुविकरणप्रभृति॥ अधअकुलिनः॥ ॥अदभक्षणे॥ घसस्वप्ने॥ वलकाङ्क्षे॥ह १०
नहिंसागत्योः॥ युजुङ्क्षिगमने॥ युमिश्रणे॥ णुस्तुतौ॥ क्ष्णुतेजने॥ ष्णुप्रस्रवणे॥ टुक्षुरुकुशब्दे॥ षुप्रसवे॥ इकस्मरणे॥ इणगतौ॥ वी:
प्रजनकान्त्यसनखादनेषुच॥ ॥रादीप्तौ॥ याप्रापणे॥ वागतिगन्धनयोः॥ ष्णाशौचे॥ श्रापाके॥ द्राकुत्सायांगतौ॥ पारक्षणे॥ लादा

ने॥ दायलवने॥ ख्याप्रकथने॥ प्रापूरणे॥ मामाने॥ ॥वृतुयादिः॥ ॥विदज्ञाने॥ असभुवि॥ मृजूशुद्धौ॥ वचपरिभाषणे॥ र॥
रुदिरश्रुविमोचने॥ ञिष्वपशये॥ श्वसप्राणने॥ अनच॥ जक्षभक्षहसनयोः॥ ॥वृतुरुदादिः॥ जागृनिद्राक्षये॥ दरिद्रादुर्ग
तौ॥ चकासृदीप्तौ॥ शासुअनुशिष्टौ॥ वृतुजक्षादिः॥ ॥वचकीमःथ्यक॥ परस्मैभाषाः॥ ॥वक्षीदव्यक्तायांवाचि॥ ईरगतौक
म्पनेच॥ ईडस्तुतौ॥ ईशऐश्वर्ये॥ आसउपवेशने॥ आङःशासइच्छायां॥ वसआच्छादने॥ कसिगतिशासनयोः॥ णिसिचुम्बने॥
णिजिशुद्धौ॥ शिञ्जिअव्यक्तेशब्दे॥ पृजीवर्जने॥ पृचीसम्पर्के॥ षूङ्प्राणिगर्भविमोचने॥ शीङ्स्वप्ने॥ इङ्अध्ययने॥ दीधीङ्दीप्ति

देवनयोः ॥ वेवीङ् वेतिना तुल्ये ॥ षूङ् प्राणिप्रसवे ॥ आत्मनेभाषाः ॥ ॥ द्विष अप्रीतौ ॥ दुह प्रपूरणे ॥ दिह उपचये ॥ लिह आ-
स्वादने ॥ ऊर्णुञ् आच्छादने ॥ ष्टुञ् स्तुतौ ॥ ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि ॥ ॥ उभयभाषाः ॥ ॥ हु दाने ॥ ञिभी भये ॥ ह्री लज्जायां ॥ पॄ पाल-
नपूरणयोः ॥ ओहाक् त्यागे ॥ घृ क्षरणदीप्त्योः ॥ हृ प्रसह्यकरणे ॥ ऋ सृ गतौ ॥ भस भर्त्सनदीप्त्योः ॥ कि ज्ञाने ॥ तुर त्वरणे ॥ ११
धिष शब्दे ॥ धन धान्ये ॥ जन जनने ॥ ॥ परस्मैभाषाः ॥ ॥ णिजिर् शौचपोषणयोः ॥ विजिर् पृथग्भावे ॥ विष्लृ व्याप्तौ ॥ डुदाञ् दाने ॥
डुधाञ् धारणपोषणयोः ॥ ॥ उभयभाषाः ॥ ॥ माङ् माने शब्दे च ॥ ओहाङ् गतौ ॥ ॥ आत्मनेभाषौ ॥ ॥ हुभृञाद्या दिश २४ ॥

श्लुविकरणा जुहोत्यादयः समाप्ताः ॥ ॥ दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिकान्तिगतिषु ॥ षिवु तन्तुसन्ताने ॥ स्रिवु गतिशो-
षणयोः ॥ ष्ठिवु निरसने ॥ ष्णसु अदने ॥ क्नसु ह्वरणदीप्त्योः ॥ नृती गात्रविक्षेपे ॥ त्रसी उद्वेगे ॥ कुथ पूतीभावे ॥ पुथ हिंसायां ॥ गुध
परिवेष्टने ॥ क्षिप प्रेरणे ॥ पुष्प विकसने ॥ तिम ष्टिम ष्टीम आर्द्रीभावे ॥ व्रीड चोदने ॥ इष गतौ ॥ षह षुह चक्यर्थे ॥ जॄष झॄष वयो-
हानौ ॥ शो तनूकरणे ॥ छो छेदने ॥ षो अन्तकर्मणि ॥ दो अवखण्डने ॥ राध साध संसिद्धौ ॥ [illegible] ॥ व्यध ताडने ॥ पुष पु-
ष्टौ ॥ शुष शोषणे ॥ दुष वैकृत्ये ॥ श्लिष आलिङ्गने ॥ ष्विदा गात्रप्रक्षरणे ॥ [illegible] ॥ शुध शौचे ॥ षिधु संराद्धौ ॥ रध हिंसा-

यां४३॥ तृप प्रीणने॥ दृप हर्षमोहनयोः४॥ मुह वैचित्ये॥ द्रुह जिघांसायां॥ ष्णुह उद्गिरणे॥ ष्णिह प्रीतौ॥ णश अदर्शने॥ इति र-
धादि८ मुहादि८॥ ॥शमु दमु उपशमे॥ तमु काङ्क्षायां॥ श्रमु तपसि खेदे च॥ भ्रमु अनवस्थाने॥ क्षमू सहने॥ क्लमु ग्लानौ॥ मदी
हर्षे॥ इति शमादि ८॥ ॥असु क्षेपणे॥ यसु प्रयत्ने॥ जसु मोक्षणे॥ तसु दसु उपक्षये॥ वसु स्तम्भे॥ व्युष प्युष विभागे॥ प्लुष दाहे॥ १२
बिस प्रेरणे॥ कुस संश्लेषणे॥ बुस उत्सर्गे॥ मुस खण्डने॥ मसी परिमाणे॥ लुट विलोटने॥ उच समवाये॥ भृशु भ्रशु भ्रंशु अधःपत-
ने॥ वृश वरणे॥ कृश तनूकरणे॥ ञितृष पिपासायां॥ हृष तुष्टौ॥ कुप क्रुध रुष कोपे॥ डिप क्षेपे॥ ष्टुप समुच्छ्राये॥ गुप व्याकुल-

त्वे॥ युप रुप लुप विमोहने॥ लुभ गार्द्ध्ये॥ क्षुभ संचलने॥ णभ तुभ हिंसायां॥ क्लिदू आर्द्रीभावे॥ ञिमिदा स्नेहने॥ ञिक्ष्विदा भावने
च॥ ऋधु वृद्धौ॥ गृधु अभिकाङ्क्षायां॥ ॥यवनस्मैकामाः४॥२४॥ वृतपुषादि५४॥ ॥षूङ प्राणिप्रसवे॥ दूङ परितापे॥ दीङ क्षये॥
धीङ आधारे॥ मीङ हिंसायां॥ रीङ स्रवणे॥ लीङ श्लेषणे॥ डीङ गतौ॥ व्रीङ वरणे॥ स्वादय ओदनुबन्धाः॥ इति स्वादि७॥ ॥
पीङ पाने॥ माङ माने॥ ईङ गतौ॥ प्रीङ प्रीतौ॥ जनी प्रादुर्भावे॥ दीपी दीप्तौ॥ पूरी आप्यायने॥ जूरी जीर्णे॥ तूरी त्वरणहिंसयो-
ः॥ धूरी गूरी घूरी हिंसायां॥ शूरी स्तम्भे॥ चूरी दाहे॥ तप ऐश्वर्ये वा॥ वावृतु वरणे॥ क्लिश उपतापे॥ काशृ दीप्तौ॥ वाशृ शब्दे॥ प

खिद्यते विद्यते अकर्मकः बुध्यते युध्यते अनुरुध्यते मन्यते अन्यते युज्यते

दमनी॥ खिद दैन्ये॥ विद सत्तायाम्॥ बुध अवगमने॥ युध संप्रहारे॥ अनो रुध कामे॥ मन ज्ञाने॥ अन प्राणने॥ युज समाधौ॥

सृज्यते लिश्यते णह्यति णह्यते मृष्यति मृष्यते शुच्यति शुच्यते नह्यति नह्यते रज्यति रज्यते शप्यति

सृज विसर्गे॥ लिश अल्पीभावे॥ ॥आत्मनेभाषाः॥ ॥णह मृष क्षमायाम्॥ शुचिर् पूतीभावे॥ णह बन्धने॥ रञ्ज रागे॥ शप आ-

शप्यते सुनोति सुनुते सिनोति सिनुते शिनोति शिनुते मिनोति मिनुते

क्रोशे॥ ॥स्वरितेतः॥ ॥इति दिवादयः समाप्ताः॥ ॥षुञ् अभिषवे॥ षिञ् बन्धने॥ शिञ् निशाने॥ डुमिञ् प्र-

चिनोति चिनुते पूर्वं स्तृणोति स्तृणुते स्तृणुते कृणोति कृणुते वृणोति वृणुते धूनोति धूनुते परस्मै॰ दुनोति हिनोति

क्षेपणे॥ चिञ् चयने॥ स्तृञ् आच्छादने॥ कृञ् हिंसायाम्॥ वृञ् वरणे॥ धूञ् कम्पने॥ ॥उभयतोभाषाः॥ ॥टुदु उपतापे॥ हि ग-

पृणोति स्पृणोति आप्नोति प्राप्नोति शक्नोति राध्नोति साध्नोति तिक्नोति तिघ्नोति सघ्नोति अश्नोति ... तिग्नोति तिघ्नोति ...

तौ वृद्धौ॥ पृ प्रीतौ॥ स्पृ पालने॥ आप्लृ व्याप्तौ॥ शक्लृ शक्तौ॥ राध साध संसिद्धौ॥ तिक तिघ षघ अश ... हिंसायाम्॥ 13

धृष्णोति दभ्नोति ऋध्नोति तृप्नोति तृप्णोति तुदादिकर्मक्लिष्टानुपदं नादिधीयते २ अश्नुते स्तिघ्नुते आत्मनेपदी

सायाम्॥ ञिधृषा प्रागल्भ्ये॥ दम्भु दम्भे॥ ऋधु वृद्धौ॥ तृप प्रीणने॥ ॥परस्मैभाषाः॥ ॥अशू व्याप्तौ॥ ष्टिघ आस्कन्दने॥ आत्मने-

तुदति नुदति नुदते दिशति दिशते भृज्जति भृज्जते क्षिपति क्षिपते क्षिपे

भाषौ॥ ॥इति स्वादयः समाप्ताः॥ ॥तुद व्यथने॥ णुद प्रेरणे॥ दिश अतिसर्जने॥ भ्रस्ज पाके॥ क्षिप प्रेरणे॥

कृषति कृषते मुञ्चति मुञ्चते लुम्पति लुम्पते विन्दति विन्दते लिम्पति लिम्पते सिञ्चति सिञ्चते कृन्तति निकृन्तति खिन्दति

कृष विलेखने॥ मुच्लृ मोक्षणे॥ लुप्लृ छेदने॥ विद्लृ लाभे॥ लिप उपदेहे॥ षिच क्षरणे॥ ॥स्वरितेतः॥ ॥कृती छेदने॥ खिद प-

पिंशति रियति पियति ऋषति धियति क्षियति सुवति तृम्फति ऋच्छति ऋच्छत्यत्यां

रिघाते॥ पिश अवयवे॥ ॥इति मुचादयः॥ ॥रि पि ऋषी गतौ॥ धि धारणे॥ क्षि निवासगत्योः॥ षू प्रेरणे॥ तृम्फ तर्पणे॥ ऋच्छ गतीन्द्रियप्र-

प्रलयः मूर्त्तिभावः काठिन्यात्मलिः क्षिप्रतिजमर्तीभूर्मी ... विचति गीर्णु ... उज्झति उर्झति चर्झति सर्जति लुभति अवति उज्झति

लयमूर्त्तिभावेषु॥ कुविच्छय॥ मृ निगरणे॥ उछी विवासे॥ उर्वी चर्वी सर्ज ... ॥लुभ सम्भवने॥ अव तुष्टौ॥ उज्झ उ-

ऊर्व॥ उज्झ उत्सर्गे॥ लुभ विमोहने॥ रिफ कत्थनयुद्धनिन्दाहिंसादानेषु॥ तृफ तृन्फ तृप्तौ॥ तुफ तुन्फ तुप तुन्प ऋफ ऋन्फ हिंसार्था ४॥ दृफ दृन्फ मिश्च उत्क्लेशे॥ गुफ गुन्फ दृभी ग्रन्थे॥ दृभी हिंसायां ग्रन्थे॥ उभ उन्भ पूरणे॥ शुभ शुन्भ शोभार्थे॥ ॥ इत्यादि १०॥ ॥ विध वि १४

धाने॥ जुड गतौ॥ पृड मृड सुखने॥ पृण प्रीणने॥ मृण हिंसायां॥ द्रुण गतौ॥ तुण कौटिल्ये॥ पुण शुभे॥ मुण प्रतिज्ञाने॥ कुण शब्दो

पकरणयोः ४॥ घुण घूर्ण भ्रमणे॥ पृच्छ ज्ञीप्सायां॥ सृज विसर्गे॥ टुमस्जो शुद्धौ॥ रुजो भङ्गे॥ भुजो कौटिल्ये॥ छुप स्पर्शे॥ रुश रि

श हिंसायां॥ लिश विच्छ गतौ॥ विश प्रवेशने॥ मृश आमर्शने॥ शद्ल शातने॥ षद्ल विसरणे॥ सुर ऐश्वर्यदीप्त्योः ४॥ कुर शब्दे॥ खुर छेद

२

ने॥ मुर संवेष्टने॥ खुर विलेखने॥ घुर भीमार्थशब्दयोः ४॥ पुर अग्रगमने॥ वृहू उद्यमे॥ तृहू स्तृहू तृन्हू हिंसार्था ४॥ इष इच्छायां

॥ मिष स्पर्द्धायां॥ किल श्वैत्यक्रीडनयोः ४॥ इल गतौ॥ हिल भावकरणे॥ शिल सिल उञ्छे॥ तिल स्नेहने॥ चिल वसने॥ चल वि

लसने॥ विल रुदने॥ णिल गहने॥ मिल श्लेषणे॥ लिख लेखने॥ कुट कौटिल्ये॥ पुट लुट संश्लेषणे॥ कुच संकोचने॥ गुज ग्रजी

करणे॥ गुड रक्षायां॥ डिप क्षेपे॥ चुट छुट त्रुट छेदने॥ स्फुट विकसने॥ मुट आक्षेपप्रमर्द्दनयोः ४॥ तुट कलह

कर्म्मणि॥ जुड बधे॥ कड मदे॥ कुड बाल्ये॥ घुट प्रतिघाते॥ तुड तोडने॥ थुड स्थुड संवरणे॥ स्फुर स्फुल संचलने॥ स्फुल संचये

नूवनि धूवनि गुवनि ध्रुवनि गुवन कूवन लक्ष्मीः

व॥णू स्तुतौ॥ धू विधूनने॥ गुपु रीषोत्सर्गे॥ ध्रु गतिस्थैर्ययोः॥ ॥इति कुटादयः॥ ॥गुङ् शब्दे॥ कूङ् शब्दे॥ ॥इति कुङादि॥ ओ

प्रियमव्यायामेप्राणत्यागेयावत् प्रियने प्रियन प्रियभ इमन विजभ लजगे लज्जगे

॥पृङ् व्यायामे॥ मृङ् प्राणत्यागे॥ दृङ् आदरे॥ धृङ् अवस्थाने॥ जुषी प्रीतिसेवनयोः॥ ओविजी भयचलनयोः॥ ओलजी ओलस्जी व्री

१०४४ नूलछि नूलछ छिनलि छिन्न छिनलि छिन्न

डा॥ ॥आत्मनेभाषाः॥ ८॥ १२१ ॥ॐ त्यनुलानुविकरणास्तुदादयः समाप्ताः॥ ॥रुधिर् आवरणे॥ भिदिर् विदारणे॥ छिदिर् द्वि १३

विलकि विक्कि विनकि विक्कि हलनि हनं याभयूनकि द्विजान् कुलनि कुन्न प्रीयनं दलनि दर्भ

धाकरणे॥ रिचिर् विरेचने॥ विचिर् पृथग्भावे॥ क्षुदिर् संपेषणे॥ युजिर् योगे॥ उछृदिर् दीप्तिदेवनयोः॥ उतृदिर् हिंसानाद

हलनि अनाःधिनछि हनकि विरुक्ष कुनकि कुआनवन कुक्कं हलनहलनछिल्लनः छिनस्ति उनलि

याः॥ ॥विभाषिताः॥ ॥कृती वेष्टने॥ पिष्लृ संचूर्णने॥ भञ्जो आमर्दने॥ भुज पालनाभ्यवहारयोः॥ तृह हिसि हिंसायाम्॥ उन्दी क्लेदने

विलिनछि
॥लिक्ष विलेखने॥

थनकि मनकि विनकि वृलकि पृलकि वृन्हे

॥अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणगतिषु॥ तञ्चू संकोचने॥ ओविजी भयचलनयोः॥ वृजी वर्जने॥ पृची संपर्के॥ ॥परस्मैभाषाः॥ ॥ञिइन्धी दी:

खिवल्ले खिले ननामिननुभयनूभवलव्वे सनानि सनूभ

प्तौ॥ खिद दैन्ये॥ विद विचारणे॥ ॥आत्मनेभाषाः॥ ॥इति श्नम्विकरणा रुधादयः समाप्ताः॥ ॥तनु विस्तारे॥ षणु दाने॥

कलमनि कलनूभ क्षिलमनि क्षिलनूभ अलमनि अलनूभ हलमनि हलनूभ घृलमनि घृलनूभ कमानि कनूभ वनूभ मनूभ

क्षणु क्षिणु हिंसायाम्॥ ऋणु गतौ॥ तृणु अदने॥ घृणु दीप्तौ॥ डुकृञ् करणे॥ ॥विभाषिताः॥ ॥वनु याचने॥ मनु अवबोधने॥ आत्मने

क्रीलमानि क्रीलीभ प्रीलमानि प्रीलीभ प्रीलमानि प्रीलीभ स्कूनानि स्कूनीभ आप्लवने

भाषौ॥ ॥इत्युविकरणास्तनादयः समाप्ताः॥ ॥डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये॥ प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च॥ श्रीञ् पाके॥ स्कुञ् आप्लवने॥ष

सिनानि सिनीभ यूनानि यूनीभ कूनानि कूनीभ मीलमानि मीलीभ पूलमानि पूलीभ पूलमानि पूलीभ लूनानि लूनीभ स्तृलमानि स्तृलीभ कृलमानि कृलीभ वृलमानि वृलीभ धूनानि धूनीभ

षिञ् बन्धने॥ युञ् बन्धने॥ क्नूञ् शब्दे॥ मीञ् हिंसायाम्॥ पूञ् पवने॥ लूञ् छेदने॥ स्तॄञ् आच्छादने॥ कॄञ् हिंसायाम्॥ वॄञ् वरणे॥ धूञ् कम्प

ने॥ ग्रह उपादाने॥ ॥क्र्यादिकाः॥ ॥लूञ् हिंसायां॥ पृथ पालनपूरणयोः॥ म्रीव्रीवरणे॥ हत्रसने॥ हविधारणे॥ हवयाहानौः

नौ॥ तृनम॥ मृणच्छ॥ ग्रवयाहानौ॥ अणगतौ॥ वीरवलेच॥ लीश्लेषणे॥ ल्वीच॥ ॥इत्यन्वादि २२ स्वादि॥ ॥व्रीवरणे॥ ज्रीवरणे॥

णरुरुरुन्धिबहिंसायां॥ स्तूङ्बवाधने॥ बन्धबन्धने॥ ग्रन्थभावनपुणिहर्षणयोः॥ मन्थविलोडने॥ ग्रन्थसन्दर्भे॥ कुन्थसंक्लेशने १७

॥मृदक्षोदे॥ मृडसुखने॥ गुधरोषे॥ कुषनिष्कर्षे॥ क्षुभसञ्चलने॥ क्लिशविबाधने॥ अशभोजने॥ उध्रसउञ्छे॥ इषआभीक्ष्ण्ये॥

विषविप्रयोगे॥ प्रुषप्लुषस्नेहनसेवनपूरणेषु॥ पुषपुष्टौ॥ मुषस्तेये॥ खचभूतिप्रादुर्भावे॥ ॥घवसमेतावा॥ ॥हठसम्

कौ॥ ग्रहमनस्नेष॥ ॥इति नाविकरणाः क्र्यादयः समाप्ताः॥ ॥चुरस्तेये॥ चितिस्मृत्यां॥ यत्रिसंकोचने॥ स्फुडिपरिहासे॥

लक्षदर्शनाङ्कयोः॥ रुक्षआदने॥ कुत्रिअनृतभाषणे॥ लडउपसेवायां॥ मिदमिलक्ष्मिहरनदने॥ ओलमिडक्षेपे॥ जलअपवारणे

॥पीडअवगाहने॥ नटअवस्यन्दने॥ श्रथप्रतिहर्षे॥ बधसंयमने॥ स्फुपूरणे॥ दुर्जूबलप्राणधारणयोः॥ चूटछुटकुट्टछेदने॥ पुट

चुटअल्पीभावे॥ मुटसंचूर्णने॥ स्मिटअदचुटअनादरे॥ घट्टचलने॥ खडखुडसम्बरणे॥ लण्ठलण्ठसंस्कारगत्योः॥ षडठजिधि

उघिषहिंसाबलदाननिकेतनेषु॥ श्लकवल्कभाषणे॥ स्वर्ल्लकुयिघधिनभौ॥ कचिक्कान्तौ॥ पिच्छकुट्टने॥ तडआघाते॥ खडखडिक

यति कणुस्य नक्कयति धक्कयति पक्षयति चक्कयति चुक्कयति पूस्कयति पूस्कयस्य क्षालयति तालयति तुर्म तालयति कश्चनैव निक तुला तालयति धूलियानः
ति स्कन्द ॥ नक्क धक्क यसि नाशने ॥ चक्क चुक्क व्यथने ॥ पूस्क आदरानादरयोः ॥ क्षल शौचे ॥ तल प्रतिष्ठायां ॥ तुल उन्माने ॥ दुल उत्क्षेः
अन्दोलनं पृथयति प्रथयति प्रख्यानं प्रथयति संबयति धनं लोकः संबयति समलं बालयति बलयामास पूलयति धान्यं कृषिकः मूलयति तरूं लोकः कठयति दीनः सान्त्वयति लोकान् हि दयालुः
पे ॥ पृथ पृक्ष प्रक्षेपणे ॥ षम्ब सम्बन्धे ॥ संबद्ध ॥ बल निमज्जने ॥ पूल समुच्छ्राये ॥ मूल रोहणे ॥ कठि कृच्छ्रजीवने ॥ सान्त्व सामप्रयोगे ॥ १७
मानयति वादयति वादनानुप्रवर्तते कालयति पेलयति उंबयति कुणुयति उंसयति घोलयति श्लेषयति लूषयति रूषयति ब्रूषयति वर्द्धयति शुन्धयति धनं
मान पूजायां ॥ वद संदेशवचने ॥ कल पिल ति पक्षेपे ॥ कुठि अमि घल रक्षणे ॥ श्लिष श्लेषणे ॥ लूष रूष ब्रूष वर्द्ध हिंसायां ॥ शुन्धस
वधाः क्षयाविशाः श्रीस्वात्पनिक्ता जूपित्रता राजानं यमयति चयति ... विपुलं विग्रन्थपिवषणे वदनं ग्रामयति चपयति तं शूलं लीला स्यमयति स्यामयति व्यामयति हिटयति वन्धयति
ऊने ॥ क्षप मानुबन्धे ॥ यम च परिवेषणे ॥ चप कल्कने ॥ नाश नावन्धमानुबन्धाः ॥ ॥ स्यम वितर्के ॥ व्यय क्षये ॥ हिट वूधि हिं
पूलयति तृणं वा नः मूस्कयति पिडुयति धूसयति खलं वाऽत टकयति टङ्कः धूसयति अङ्गं धृष्यन्ते कीटयति कीटः चूर्णयति वस्त्रः पूजयति
सायां ॥ पूल मूस्क पिडि साघाते ॥ धूस जुकि मर्दने ॥ टकि बन्धने ॥ धूस कान्तीकरणे ॥ कीट बन्धे ॥ चूर्ण संकोचने ॥ पूज पूजायां ॥ अः

अर्कयति श्लीतयति गु०यति लुठयति लुठिः आतृणयति घृणयति वर्णयति गर्जयति मार्जयति मार्जारः पचयति विपश्ची तिजयति खड्गं कर्मकारः
र्क श्लीत स्कवने ॥ गु० आलस्ये ॥ लुठि भसले ॥ ऋत घृणु वर्णु प्रवर्णे ॥ गर्ज मार्ज शब्दार्थे ॥ पचि विस्तारवचने ॥ तिज निशाने ॥ कृ
कीर्त्तयति कीर्त्तिं वर्द्धयति कुम्बयति लुम्बयति तुम्बयति कूपयति म्लेच्छयति चुटयति चूटयति मुक्षयति ...
त संशब्दने ॥ वर्द्ध छेदनपूरणयोः ॥ कुबि आच्छादने ॥ लुबि तुबि अर्दने ॥ कूप दौर्बल्ये ॥ म्लेच्छ ॥ चुटि चुटि छेदने ॥ मुक्ष मृक्षणे ॥ ञः
लघयति लुटयति लुण्ठकः छर्दयति अन्नं लोकः शूर्पयति धान्यं गृही चुटयति वालयति गर्द्धयति दुग्धाधनं पूर्वयति ... बुक्कयति वटयति वण्टयति
लघ प्रवले ॥ लुटि स्तेये ॥ छर्द वमने ॥ शूर्प माने ॥ चुटि व स्फुटने ॥ वल रक्षी ॥ गर्द्ध अभिकाङ्क्षायां ॥ पूर्व निकेतने ॥ बुक्क भाषणे ॥ वटि विभज
मतुयति हूणायां मतुतः श्रणयति तडुयति ... आजयति वाणान् पूषयति पूषयति सदूषकः जामयति घ्राजयति
ने ॥ मति हूणायां दुश्चि ॥ श्रण दाने ॥ तडि कल्याणे ॥ अज मार्गसंस्कारे ॥ पूष पुष उत्सर्गे ॥ जसु हिंसायां ॥ ॥ धनप्रीतामाः ॥ ॥
तन्त्रयति मन्त्रयति वस्तयति गन्धयति अर्दनमिह हिंसायाम् हिष्कयति निष्कयति लालयति ... दलयति दलः
तत्रि कुटुम्बधारणे ॥ मन्त्रि गुप्तभाषणे ॥ वस्त गन्ध अर्दने ॥ हिष्क हिंसायां ॥ निष्क परिमाणे ॥ लल ईप्सायां ॥ विप सम्पादने ॥ दलि द

णम॥दसितदन्तभिन्न॥कूणसङ्कोचन॥डपतिपतघितिघितहितिहिसंघाम॥हूलघूबलो॥स्थलग्रहलल्लबलाया॥गर्जूरुतसन्ः

र्जूम॥जूलआसायां॥यकुपूजायां॥ल्ल०ल्लघायां॥स्यमविमर्के॥गूनडम्रम॥गमनकुआल्लावन॥कूलजूवक्षयलो॥हलजूरु १८

गुम॥कूटजप्रसाद॥वन्नूप्रलम्बन॥हघूलकिवन्धन॥मदहफ्रियाणे॥दिवूयविकूजन॥दृविक्लान॥विदवदनाख्याननिवा

सघ॥मनस्कन्धा॥यह्नगुम्पायां॥कूस्मकूस्मयन॥ ॥आलभनजामा॥ ॥सर्वअध्ययन॥वुकूजाबलो॥लकुडवसन्गादाविस्ढमथ॥

कलनिमीलन॥उक्तिनागम॥सूदजाग्रबलो॥उमूनातन॥घणवन्धन॥अमबाणे॥घटस्फुटेद॥घटसंघाम॥हम्यार्थ॥दिवूः

अर्दन॥अर्जूप्रतियत्न॥घूमितविलदन॥आर्द॥क्रन्दसानस्य॥लसनिल्यथाणे॥नसिरु घजूलक्षार॥भामूअसम॥अर्द पूजायां॥ः

क्लानियाउम॥गृधूप्रहसन॥रुजविश्लेषण॥यमनिकामावक्षावथा॥निवर्णुप्रनिदान॥वसम्बह्नच्छवदावहबलेपू॥ववजूसं

गथ॥च्यूहसन॥हकपिजवकल्कन॥नवलकआस्वादन॥अब्रुविलेपल॥लिगिचित्रीकवलो॥मूदसंसर्गो॥डब्रुसडघ्नू॥मूचप्र:

माचन॥आस्वाद॥सकर्मकात॥ग्रसग्रहलो॥प्रथधारलो॥दलविदारलो॥पटपूटलूटउठिपिठिलूमिरुठिलघित्रसिघिसिकूसिद

लिदसिघघघटिहहिवर्हवल्हमूपूधूपविक्षुवीवग्रथलाहलादृणदक्षूपमर्क्षहडहधूराबाधी॥पूर्णीआप्यायन॥बूजहिंसा

कथयति वरयति गणयति गुणअमिमितिअथथदः शठयति श्वठयति पटयति वटयति रहयति

यि॥ स्वद आस्वादने॥ ॥इति स्वदन्ताः॥ ॥कथ वाक्यप्रबन्धे॥ वर ईप्सायां॥ गण संख्याने॥ शठ श्वठ सम्यगवभाषणे॥ पट वट ग्रन्थे॥ रह

स्तनयति स्तनयित्नुः गदयति पतयति पषयति कलयति

त्यागे॥ स्तन गद देवशब्दे॥ पत गतौ॥ पष अनुपसर्गात्॥ स्वर आक्षेपे॥ रच प्रतियत्ने॥ कल गतौ संख्याने च॥ चह परिकल्कने

महयति स्पृहयति भामयति सूचयति कुमा

॥मह पूजायां॥ सार कृप श्रथ दौर्बल्ये॥ स्पृह ईप्सायां॥ भाम क्रोधे॥ सूच पैशुन्ये॥ खेट भक्षणे॥ खोट क्षेपे॥ गोम उपलेपने॥ कुमा १२

रयति

र क्रीडायां॥ शील उपधारणे॥ साम सान्त्वने॥ वेल कालोपदेशे॥ पल्यूल लवनपवनयोः॥ वात गति सुखसेवनयोः॥ गवेष मा॰

निवासयति निवसनं भाजयति ध्वनयति

र्गणे॥ वास उपसेवायां॥ निवास आच्छादने॥ भाज पृथक्कर्मणि॥ सभाज प्रीतिसेवनयोः॥ ऊन परिहाणे॥ ध्वन शब्दे॥ कूट दाहे॥ क

स्तेनयति

[illegible] कूण गुण आमन्त्रणे॥ स्तेन चौर्ये॥ ॥परस्मैभाषाः॥ ॥आ गर्वादात्मनेपदी॥ पद गतौ॥ गृह ग्रहणे॥ कुह विस्मापने॥ शू

अर्थयते प्रार्थयते गर्वयते आत्मनेपदिनः शूरयति कू

र वीर विक्रान्तौ॥ स्थूल परिबृंहणे॥ अर्थ उपयाच्ञायां॥ सत्र सन्तानक्रियायां॥ संग्राम युद्धे॥ गर्व माने॥ सूत्र अवमोचने॥ मूत्र

रूक्षयति चित्रयति

प्रस्रवणे॥ रूक्ष पारुष्ये॥ पार तीर कर्मसमाप्तौ॥ पुट संसर्गे॥ कत्र शैथिल्ये॥ अंस समाघाते॥ चित्र चित्रीकरणे॥ कदाचिद्दर्श

वटयति छिद्रयति दण्डयति अङ्कयति

ने॥ वट विभाजने॥ लज प्रकाशने॥ मिश्र संपर्के॥ श्याम श्लाघायां॥ छिद्र कर्णभेदने॥ दण्ड दण्डनिपातने॥ अङ्क लक्षणे॥ सुख दुःख

छेदयति

तत्क्रियायां॥ रस आस्वादनस्नेहनयोः॥ व्यय वित्तसमुत्सर्गे॥ रूप रूपक्रियायां॥ छेद द्वैधीकरणे॥ व्रण गात्रविचूर्णने॥ वर्ण

शुक्रिया विष्णुक्रान्ता गुलवचलम्॥ पञ्चहविनगाव॥ लाक्षक्रयपुत्रवल॥ अघयापकवल॥ वकुलमतन्त्रिदर्णन्॥ ऽनिदजूमनि
वसनहृयि॥ ॥श्वेतायाश्वेतनवमालातिकृष्णवकानामश्वतवनकलायश्च॥ मकुवकुविनीलुक्र॥ पुष्पश्रयश्च॥ हृद्रसयवषु॥ अ
ङ्किकवाटयाश्वदयाश्वो॥ यूवान्यथा॥ कनवा॥ ॥स्थूलद्लयूवश्चि पृक्कद्राणामन्यस्थदलधागुलश्च॥ वहाश्चादिकूश्च॥ प्रियस्थिव
स्थिमावृगुवूवकूलकृप्रदीर्घक्रस्वदृद्धहन्दानकाणंप्रस्थस्वन‍वर्दन्तयद्राघक्रसवर्षहन्दा॥ नद्वदिप्यमेय॥ सूवकूलं॥
सख्याथविदानामन्यज्ञाम्लूनकाविनत्रव॥ एकस्वबाणांमद[illegible]॥ कृष्णाविकल्पनका॥ ॥युञ्जुवसंयमन॥ बहुमर्कल॥ २०

२०